



पत्र-पुष्प



निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र (14-03-20)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा अपनी शुभ चिंतक वृत्ति द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करने वाले विश्व सेवाधारी निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

मीठा बाबा कहे बच्चे, अब निर्माण का कार्य करते हुए अपनी निर्माण स्थिति में सदा स्थित रहो। यह बैलेन्स ही सबकी ब्लैसिंग दिलायेगा। समय प्रमाण अब स्वयं पर स्वयं का एक राज्य हो, सम्पूर्ण पवित्रता का एक सत्य धर्म, अखण्ड सुख, शान्ति और सम्पत्ति का वरदान प्राप्त कर संगमयुग के इस वर्से के आधार पर भविष्य अधिकार प्राप्त करना है। तो मीठे बाबा ने जो सुनाया है सभी ने उस पर अटेन्शन देकर स्वयं को चेक किया होगा। अभी उसे दिल में समाना और अपने स्वरूप में लाना, फिर प्रैक्टिकल लाइफ में यूज करना। जो भी पूर्व जन्मों के कर्मबन्धन हैं उन्हें योगबल से खलास करना है अब कोई नया बंधन नहीं बनाना है। जितना हम देह और देह के सम्बन्धों के बंधन से न्यारा बनते जाते उतना सुख मिलता इलाही है। मैं अपने देह को भी बन्धन बनायेंगी तो दुःख है इसलिए देह में होते भी जैसे मैं देह से न्यारी हूँ। देह में हूँ ही नहीं। आत्मा इस शरीर से अगर निकल जाये तो यह शरीर कोई काम का नहीं। तो यही अभ्यास करना है कि यह शरीर भी मेरा नहीं है, शरीर में हूँ लेकिन न्यारी और विदेही हूँ। सारे दिन में आत्मा कितने विचार करती है! अभी उसको समझके मन को कन्ट्रोल में रखना, फ्री रहना, इससे मन शान्त होगा। बहुत अच्छा गीत है मन हो शान्त, तन हो शीतल, ऐसी दुनिया बनानी है..। कभी भी अन्दर से यह आवाज न निकले यह क्या हुआ? क्यों हुआ! जो हो रहा है अच्छा, जो होगा सो अच्छा। भावना, सच्चाई और प्रेम तीनों ही अच्छा काम कर रहे हैं। भावना अन्दर है, सच्चाई दिल में है और प्रेम ऑटोमेटिक बाबा के महावाक्य सुनते लाइफ में अनुभव होता है। जितना बाबा की याद में रहते उतना बाबा प्यार देकरके अपनी ओर खींच लेता है। हमें कोई फिकर नहीं करना है, फखुर में रहना है। बाबा के महावाक्य जो दिल को लगते हैं वही हमारी जीवन यात्रा को सफल करते हैं।

जब हम ऐसी ज्ञान की मीठी-मीठी बातों में रमण करते हैं, तो ऐसे लगता है जैसे झूले में मौज से झूल रहे हैं, जिससे खुशी का अनुभव होता है। उस समय कर्मेन्द्रियां शान्त हैं तो सुख बहुत अच्छा है। वातावरण में शान्ति, प्रेम और खुशी का वायुमण्डल है। किसी का भी चेहरा मुरझाया हुआ अच्छा नहीं लगता, जो मूँझते हैं वही मुरझाते हैं। तो कभी मूँझना नहीं, क्या करूँ, कैसे करूँ, सरकमस्टांश ऐसे हैं, हालतें दुनिया की ऐसी हैं... जब ऐसे विचार आते हैं तब मूँझते और मुरझाते हैं। बाबा की मेहरबानी है जो बाबा ने अपना बनाकर क्या करूँ, कैसे करूँ... इससे छुटकारा दिला दिया। बाबा कहते बच्चे तुम्हें रूहे गुलाब की तरह रहना है, अपने रूहानियत की खुशबू सब तरफ फैलानी है। ऐसे रूहाब में रहने वाले का चेहरा चमकता है, उसे देख बाबा भी कहेगा मेरा बच्चा हो तो ऐसा। बच्चा कहे बाबा और बाबा कहे बच्चे। तो बच्चे और बाबा के इस सम्बन्ध में कितना आनंद है! ऐसा आनंद स्वरूप बनना है। यह आनंद स्वरूप की स्थिति बहुत ऊंची है, इसमें सच्चाई, प्रेम, खुशी और सुख सब समाया हुआ है। ऐसी आनंद स्वरूप स्थिति त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों का मालिक बना देती है। यही सच्चिदानंद की स्थिति है। सत् है, चितन से फ्री है, मन वा चित्त में और कोई बात नहीं है तो आत्मा आनंद स्वरूप है। जैसे मुझ आत्मा पर बाबा की दया दृष्टि है, ऐसे मैं समझती हूँ कि मेरे जैसा सुखी सारा संसार हो जाए, इसके लिए मैं वेट करती हूँ। यह सारा संसार ही सुखमय शांतिमय बन जाये, यही मेरी शुभ भावना है।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. जानकी



ये अव्यक्त इशारे



“आलस्य, अलबेलापन और बहानेबाजी से मुक्त बनो”

1) चलते-चलते पुरुषार्थ में थकावट आना वा पुरुषार्थ साधारण रफ्तार में हो जाना, कोई विघ्न नहीं है लेकिन लगन भी श्रेष्ठ नहीं है तो इसको भी आलस्य कहेंगे। यदि जीवन में उल्लास या कोई विशेष उमंग नहीं है तो यह आलस्य की निशानी है। अब इस आलस्य से मुक्त बनो।

2) पुरुषार्थ में आगे बढ़ने में यह आलस्य बहुत विघ्न रूप बनता है। यह जो कहने में आता है, अच्छा सोचेंगे, करेंगे, कर ही लेंगे... यह आलस्य की निशानी है। आज सोचते हैं कल से करेंगे, यह कार्य पूरा करके फिर यह करेंगे, ऐसे-ऐसे संकल्प ही आलस्य का रूप हैं। जो करना है वह अभी कर लो। कल पर नहीं छोड़ो।

3) आलस्य अपने सर्व साथियों सहित आता है, अकेला नहीं आता। जैसे बाप अपने बच्चों सहित प्रत्यक्ष होता है। वैसे यह जो विकार है वह भी अकेले नहीं आते, साथियों के साथ आते हैं। फिर कई फरमान उल्लंघन होते हैं और अन्दर किसी न किसी बात का अरमान रह जाता है। वह न तो स्वयं सन्तुष्ट रहते, न दूसरों को सन्तुष्ट कर पाते।

4) बाप के सम्बन्ध से बच्चों का अलबेलापन वा नाज सभी देखते हुए आगे बढ़ाया लेकिन अब सतगुरु के रूप में किसी भी प्रकार से पावन बनाकर साथ ले जाने का पार्ट है। सतगुरु अर्थात् सत संकल्प, सत बोल, सत कर्म बनाने वाला। फिर चाहे नॉलेज द्वारा वा पुरुषार्थ द्वारा बनावे, चाहे फिर सजा द्वारा। सतगुरु नाज और अलबेलापन देखने वाला नहीं है इसलिए अब समय और बाप के रूप को जानो। ऐसे न हो - बाप के इस अन्तिम स्वरूप को न जानते हुए अपने बचपन के अलबेलेपन में आकर अपने आपको धोखा दे बैठो।

5) वर्तमान समय के प्रमाण कोई हल्की व्याधि (विकारों की बीमारी) भी है तो वह बड़ी व्याधि का रूप ले सकती है। जरा भी किसी प्रकार का रोग प्रवेश हो गया तो एक व्याधि फिर अनेक व्याधियों को लाती है। एक में अलबेले रहे, हल्की बात समझकर चले तो धोखा खा लेंगे, इसलिए हल्की व्याधि को बड़ा समझ वहाँ ही खत्म कर दो तो आत्मा कभी निर्बल नहीं होगी, सदा हेल्दी रहेगी।

6) जैसे लौकिक रूप में जब छोटे अलबेले होते हैं, जिम्मेवारी नहीं होती है तो समय, शक्ति वा धन अपने प्रति ही लगाते हैं। लेकिन जब हृद के रचयिता बन जाते हैं तो जो भी शक्तियाँ वा समय है वह रचना के प्रति लगाते हैं। तो आपका भी बचपन अब

पूरा हुआ, अभी आप सब मास्टर रचयिता, जगत माताएं हो। विश्व के उद्धार मूर्त, आधार मूर्त हो, इसलिए जरा भी अलबेलापन न हो। अब तो आप के सिर्फ एक सेकेण्ड के शुद्ध संकल्प की शक्ति से माया छुईमुई मुआफिक मूर्छित हो जानी चाहिए।

7) अब अपने पुरुषार्थ में समय लगाने का समय बीत चुका। अब दूसरों को पुरुषार्थ कराने में लगाओ क्योंकि विधाता द्वारा आप सभी श्रेष्ठ आत्मायें विधान बनाने वाली हो, इस समय आप ब्राह्मणों के जो भी श्रेष्ठ कर्म हैं वही विश्व के लिये सारे कल्प के अन्दर विधान बन जाते हैं। ऐसे अपने को विधान के रचयिता समझ करके हर कर्म करो। तो कभी भी अलबेलापन नहीं आयेगा।

8) मन में यह संकल्प उठना कि विजयी तो अन्त में बनेंगे व अन्त में निर्विघ्न और विघ्न-विनाशक बनेंगे—यह संकल्प ही रॉयल रूप का अलबेलापन है अर्थात् रॉयल माया है; यह सम्पूर्ण बनने में विघ्न डालता है। यही अलबेलापन सफलतामूर्त और समान-मूर्त बनने नहीं देता है। इसलिए इन संकल्पों से मुक्त बन विघ्न विनाशक स्थिति बनाओ।

9) कई बच्चे अपने पुराने संस्कारों की आहुति करके, स्वाहा करके जाते हैं, लेकिन फिर वह संस्कार वापस लौट आते हैं, इसका कारण भी अलबेलापन है। जैसे बीज बोने के बाद उसकी सम्भाल जरूरी है, ऐसे जो संकल्प करते हो, उसकी पालना नहीं करते। बीज डालकर अलबेले हो जाते हो। संकल्प रूपी बीज को बार-बार रिवाइज करो। आराम पसन्द के संस्कार नहीं, मगर चिन्तन के संकल्प होने चाहिए, एक-एक संस्कार की चिन्ता लगनी चाहिए। हमेशा ख्याल रहे कि छोटा-सा दाग भी मेरी वैल्यु कम कर देगा। यह चिन्तन चिन्ता के रूप में हो तो अलबेलापन समाप्त हो जायेगा।

10) जब मेहनत ज्यादा, प्राप्ति कम देखते हो तब दिल-शिकस्त व अलबेले हो जाते हो। फिर कहते हो कि “करते तो हैं लेकिन मिलता नहीं, तो क्यों करें, हमारा पार्ट ही ऐसा है।” यह दिल-शिकस्त व अलबेलेपन के और फल न देने वाले संकल्प हैं। जब कहते हो कि संगमयुग असम्भव से सम्भव होने का युग है। तो स्वयं को भी जो मुश्किल व असम्भव महसूस होता है, उसको एक सेकेण्ड में सम्भव करो—यह है दृढ़ संकल्प।

11) अलबेलापन तब आता है जब समय की समाप्ति का बुद्धि में निश्चय नहीं है। निश्चित न होने के कारण निश्चिन्त रहते हो! जैसे सर्विस के प्लैन्स का समय निश्चित करते हो, तब से निश्चिन्त रहना समाप्त हो जाता है, ऐसे समय की समाप्ति का भी बुद्धि में निश्चित हो तो अलबेलापन समाप्त हो जायेगा।

12) कई बच्चे समझते हैं मैं स्वयं को जानता हूँ कि मैं ठीक हूँ दूसरे नहीं जानते व दूसरे नहीं पहचानते, आखिर पहचान ही लेंगे व आगे चलकर देखना क्या होता है! यह भी ज्ञान स्वरूप, याद स्वरूप आत्मा के लिए स्वयं को धोखे देने वाली अलबेलेपन की मीठी निद्रा है। जैसे निद्रा में जाने से पहले निद्रा की निशानियाँ दिखाई देती हैं उस नींद की निशानी है उबासी और अज्ञान नींद की निशानी है उदासी। उदासी आना माना आलस्य अथवा अलबेलापन आना इसलिये इस पर अच्छी तरह से चेकिंग करो और चेंज करो।

13) बापदादा अब बच्चों को तीन बातों से मुक्त कराना चाहते हैं 1-आलस्य 2-अलबेलापन और 3-बहाने बाजी। अब उड़ती कला की बाजी में नम्बर लो, बहानेबाजी में नम्बर नहीं लो। आपके साथी, सहयोगी बहुत अन्धकार में हैं, अंधकार के लिये आप रोशनी हो। ऐसे नहीं कहो कि अंधकार था इसीलिये ठोकर खा ली! इस बहानेबाजी को छोड़ अभी साधारण संकल्प नहीं करो, प्रतिज्ञा करो। शरीर जाये लेकिन प्रतिज्ञा नहीं जाये। कितना भी सहन करना पड़े, परिवर्तन करना पड़े लेकिन प्रतिज्ञा नहीं तोड़ो, इसको कहा जाता है दृढ़ संकल्प।

14) ब्राह्मण अर्थात् जो ब्रह्मा बाप की नेचर वह ब्राह्मणों की नेचर

हो। यह शब्द कभी गलती से भी नहीं बोलना, न सोचना, क्या करूँ मेरी नेचर है! यह बहानेबाजी है। यह कहना भी अपने को छुड़ाने का बहाना है। नया जन्म हुआ, नये जन्म में पुरानी नेचर, पुराना स्वभाव कहाँ से इमर्ज होता है? ब्राह्मण जीवन अर्थात् जो ब्रह्मा बाप का हर कदम है वह ब्राह्मणों का कदम हो।

15) बाप को बहानेबाजी अच्छी नहीं लगती, यह हुआ, यह हुआ, यह हुआ... यह का गीत अब समाप्त होना चाहिए। अच्छा हुआ, अच्छा होगा, अच्छा रहेंगे, अच्छा सबको बनायेंगे। अच्छा-अच्छा-अच्छा का गीत गाओ। तो पसन्द है? पसन्द है? बहानेबाजी को खत्म करेंगे?

16) कई बच्चे कहते हैं बाबा यह ऐसे नहीं था, ऐसे था; ऐसा नहीं होता तो वैसा नहीं होता; इसने ऐसे किया, सरकमस्टांश ही ऐसे थे, बात ही ऐसी थी। तो 'ऐसा' और 'वैसा'—यह भाषा बहानेबाजी की है और दृढ़ प्रतिज्ञा की भाषा है—'ऐसा' हो वा 'वैसा' हो लेकिन मुझे 'बाप जैसा' बनना है। मुझे बनना है। दूसरों को मेरे को नहीं बनाना है, मुझे बनना है। दूसरे ऐसे करें तो मैं अच्छा रहूँ, दूसरा सहयोग दे तो मैं सम्पन्न वा सम्पूर्ण बनूँ—नहीं। इस लेने के बजाए मास्टर दाता बन सहयोग, स्नेह, सहानुभूति देना ही लेना है।

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

31-03-15

मधुबन

“बाबा की याद स्वतः आये उसके लिए बाबा को प्यार करो, उसकी श्रीमत पर सदा चलते रहो”

(दादी जानकी)

हम सब कहाँ के रहने वाले हैं? वैकुण्ठ के। अभी तो वैकुण्ठ में नहीं है ना इसलिए अभी तो निराकारी दुनिया में रहना है, तभी वैकुण्ठ सतयुग में जायेंगे। हमको त्रेता में नहीं जाना है। सतयुगी महाराजा महारानी बनना है, उसके लिए क्या पुरुषार्थ है?

बाबा को जब माँ के रूप में देखते हैं तो अन्दर से बड़ा प्यार आता है। बाप है तो वरसे के अधिकारी हैं। अभी भी हम बच्चे हैं तो बच गये हैं माया से। नहीं तो कोई न कोई माया के वश हो जाते हैं इसलिए मैं कहती हूँ माया की छाया भी न पड़े। जब से बाबा की बनी, मुक्ति जीवनमुक्ति मिल गई यानी कोई भी बुराइयों से मुक्त हो गये।

बाबा मुरली में सीधा ही कहेगा बच्चे मामेकम् यानी मुझ एक को ही याद करो और एक से ही सब सम्बन्ध रखो। याद करेंगे तो बाबा का प्यार पायेंगे, ऐसे है? बाबा को याद करो, तो फौरन प्यार का अनुभव होता है। मैं जो तीन बारी ओम् शान्ति बोलती हूँ इसने बहुत सुख दिया है, यानी समझ दी है। ज्ञान मार्ग में सदा

सुखी कौन है? आत्मा और परमात्मा बिछुड़े बहुकाल, सुन्दर मेला कर दिया जब सतगुरु मिला दलाल। तो बाबा का सतगुरु का रूप दलाल के रूप में ऐसा है, जो बिछुड़ी हुई आत्मायें बाप से मिलन मना रही हैं। अभी मिले हैं सतगुरु से तो भासना आती है, दिमाग ठण्डा, स्वभाव सरल है। जब दिमाग थोड़ा भी गर्म होता है तो स्वभाव दूसरा हो जाता है। स्वभाव अच्छा है तो सेवा हमारा फर्ज भी है। भले छोटे हैं, कोई बूढ़े हैं या बड़े हैं परन्तु सब कहते हैं बाप समान बनना है, जो जितना बाप समान बनेंगे उतना औरों को आप समान बनायेंगे। कोई नहीं कहता मम्मा समान बनें, क्योंकि याद क्या है, वो सब हम सभी बाबा से सीखे हैं। मैं तो ब्रह्माबाबा से सीखी हूँ। ब्रह्माबाबा से जो ज्ञान मिला है वो जीवन में लाने से बहुत सुख मिला है। गीत है ना बाबा तेरा बनने में सुख मिलता इलाही है...। तो ऐसा सुख अनुभव होता है? एक दो को नहीं देखो, खुद को देखो। भले यह गीत किसने भी बनाया होगा पर गाती हम हैं। सारा दिन और कोई सोच नहीं है परन्तु बाबा का

बनने से सुख जो मिला है, इतना मिला है, जो संग में आवे उसको भी यह रंग लग जाये।

शुरू में अल्फ अल्लाह, बे बादशाही.. जैसे स्कूल में पढ़ते हैं 'ए' अल्लाह, 'बी' बादशाही। अल्लाह का बनने से बादशाही मिलती है। 'सी' आई एम चाइल्ड ऑफ बाबा। 'डी' मैं डिवोटी नहीं हूँ पर शिवबाबा की पोत्री हूँ, ब्रह्मा की बेटी हूँ। 'ई' एवर यह याद है। यह पता नहीं था कि बाबा का बनने में इतना सुख मिलेगा। तो याद दिल से करनी है, सेवा मन से करनी है। कहा जाता है मन्सा, वाचा, कर्मणा माना कर्म से भी हर रोज़ यज्ञ की सेवा करने से बहुत कमाई जमा होती है। अभी जब मुरली में याद की बात आती है तो मुझे वो पुराने दिन याद आते हैं, साकार बाबा के साथ बिताये हुए दिन याद आने से अलग से याद करना नहीं पड़ता है। खाते-पीते, चलते-फिरते बाबा के साथ हैं तो वो ताकत अभी भी मिल रही है। चलती हूँ, यहाँ आती हूँ, सिर्फ बाबा याद नहीं आता पर बाबा ही सब कुछ कराता है।

कभी भी नाजुक नहीं बनना चाहिए, नाजुक नेचर होगी तो कोई कुछ कहेगा तो फौरन माइण्ड करेगा। कहेंगे मैं इनसे बात नहीं करूँगी क्योंकि सदा ही यह ऐसे बात करती है, ऐसी किसकी भी नेचर हो तो इस बड़ी भूल को आज रियलाइज करके फिर से यह भूल नहीं करना। दुःख देना, दुःख लेना बड़ी भूल है। बाबा मुझे कभी किसी के लिए कहता था बच्ची, इसे कोई भी तन की, मन की, धन की मुश्किलों आवे तो इसको मदद करना। तो मैं और कोई काम नहीं कर सकती हूँ लेकिन बाबा की जो प्रेरणा है वो काम तो करना चाहिए ना! इसमें जी बाबा कह करके करने से कैसा भी काम हो वो सहज हो जाता है। भले मेरे हाथ में पैसा नहीं था, पर आज्ञाकारी बनने से पता नहीं पैसा कहाँ से आ जाता था, कोई निमित्त बन जाता था इसलिए जिगरी दिल कहती है बाबा तेरा बनने में सुख मिलता इलाही है। हम सब अभी त्रिनेत्री, त्रिकादर्शी, त्रिलोकीनाथ तीनों लोकों के मालिक हैं। यह किसको नशा है? तीसरा नेत्र खुला रहने से बड़ा मजा आता है। त्रिकालदर्शी माना स्वदर्शन चक्रधारी बनना। बाबा ने पहले कैसे हमको प्यार

किया वो सब हिस्ट्री याद आती है। तो कइयों को अभी भी वो बाबा के साथ का पुराना प्यार याद आता है। तो आप भी याद से पहले बाबा से प्यार करो, तो बाबा आपेही याद आयेगा। बाबा को प्यार करना माना बाबा की हर श्रीमत पर चलते रहना। मनमत वा परमत पर न चलें। ऐसी सेवा कराने के लिए बाबा ने निमित्त बनाया है। तो कोई-कोई आत्मा में भावना रहती थी कि यह बाबा की आज्ञाकारी बने और बाबा से प्यार पा करके बाबा की याद में ईमानदार रहे। यज्ञ की अच्छी सेवा करके बाबा के दिल में बैठने की जगह बना लेना चाहिए। बाबा के दिल में बच्चे और हम बच्चों के दिल में बाबा। शिवबाबा ने इस रथ को ऐसा निमित्त बनाया है जो हमने कभी ब्रह्मा बाबा को आवाज से बोलते नहीं सुना।

तो जो बाबा का प्यार मिला है, जो बाबा की शिक्षायें मिली हैं, जो सावधानी मिली है वो बहुत सुखदाई है। सावधानी माना कोई ऐसा कर्म न करूँ जो बाबा को अच्छा न लगे। तो मैं आज आप सबको दिल से कहती हूँ कि बाबा का ऐसा शुक्रिया मानो जो बाबा ने हमें अपना बनाया है। और अपना बनाके सेवाधारी, त्यागी तपस्वी बनाया है। अगर जरा भी कहाँ संबंध वा पैसे आदि में त्याग वृत्ति की कमी हो तो थोड़ा अपने आपको सम्भालो, सावधान हो जाओ। किसकी भी कम्प्लेन्ट हो, गलती हो वो देखते सुनते, उसका असर हमारी शक्ल में न आवे, यह सम्भाल करनी है। दूसरा, बाबा की याद से ऐसे साइलेंस में, अशरीरी होने का अभ्यास और अनुभव करते रहो जो अन्त तक काम आता रहे। तो आप भी गुप्त योगी, सहयोगी, सहजयोगी जैसा बाबा कहता है मामेकम् मनमनाभव होके रहो, कभी तनमनाभव, कभी धनमनाभव होक नहीं रहो, तभी सतयुगी दुनिया स्थापन करने के लिए निमित्त बन सकेंगे। जैसे कोई मरता है तो कहते हैं स्वर्गवासी हुआ, इतनी स्वर्ग की महिमा है। तो हम वो स्वर्ग स्थापन कर रहे हैं, तो कितना ध्यान रखना पड़ेगा! यह सब करते भी निराकारी दुनिया में रहना है। ओम् शान्ति।

दूसरा क्लास

“घर जाने के पहले और सब चिन्ता वा चिन्तन छोड़ विकर्माजीत और कर्मातीत बनने की धुन लगाओ”

मुझे फर्स्ट टाइम कौन देख रहे हैं? (कुछ लोगों ने हाथ उठाया) बड़ी खुशी की बात है। हम भी आप सबका दर्शन करके प्रसन्न हो गये। आप प्रसन्न हो गये या हम हो गये? बाबा कहे बच्चे, बच्चे

कहे बाबा, ऐसे खुशानसीब हैं। हमारे खुशी की एक दो को खैंच होती है। अभी यहाँ पाण्डव भवन में चारों धाम की यात्रा करो तो कितना अच्छा लगता है।

आजकल मुरली में बाबा याद क्या होती है, उसके बारे रोज़ अच्छी और नई बातें सुनाता है। याद के बिगर न चल सकते हैं, न बोल सकते हैं। ज्ञानसरोवर भी कम नहीं है, वहाँ पर डबल फॉरेनर्स को बहुत अच्छा लगता है। शान्तिवन तो है ही विशाल, दिन-रात कितनी सेवायें हो रही हैं। तो इस वैराइटी स्वरूप को ही भगवन का विराट रूप दिखाया है।

जब पहली बार दादी विदेश चक्र पर आई तो कहा कि यह सब बाबा की डायरेक्ट सन्तान है, इन्होंने निमित्त यह लास्ट जन्म विदेश में लिया है, बाबा की सेवा के लिए, परन्तु यह सब बाबा के पुराने भारतवासी बच्चे हैं।

बाबा का बनने से जो सुख मिला वो सुनाने जैसा नहीं है, एक दो को आप समान बनाने के लिए है। इसके सिवाए और कोई चिंता नहीं है, कोई चिंतन नहीं है क्योंकि चिंता उसकी की जाए जो अनहोनी हो। मन में मनमनाभव है तो मन शान्त है, बुद्धि श्रेष्ठ है इसलिए व्यर्थ सोचते नहीं हैं। व्यर्थ चिंतन से फ्री कौन है, वो हाथ उठाओ क्योंकि अगर व्यर्थ चिंतन होगा तो सत् चित्त आनन्द स्वरूप नहीं होंगे इसलिए हम हमेशा कहती हूँ चित्त में सच्चाई हो और शुभ चिंतन में रह करके अपने लिए भी और औरों के लिए भी कभी किसी भी कारण से व्यर्थ नहीं सोचो। सेवा करते मनमनाभव और मध्याजीभव होकर रहने से, श्रेष्ठ चिंतन करने से बहुत सुख मिलता है। बाबा तो सारी विश्व को सुख शान्ति दे रहा है, हमारी बुद्धि भी हदों से पार रहे, कोई भी बात की हद नहीं हो। बाबा रचता है, रचना का ज्ञान दे रहा है। हमें चारों सब्जेक्ट में फुल

माक्स लेना है।

अब घर जाना है, उसके पहले अभी विकर्माजीत बनना है। बाबा की याद के बल से विकर्माजीत बनना भाग्य हो गया है। बाबा कहता है कोई भी ऐसा काम नहीं करो, ऐसी कोई भूल नहीं करो। विकर्माजीत, कर्मातीत बनना है या बने हो? मैं अपने से पूछती हूँ। एक दो को देख दिल कहता है, भावना ऐसी है जो अब घर जाने के लिए जैसे हम तैयार हैं। शिवबाबा तो जन्म-मरण में नहीं आता, परन्तु ब्रह्माबाबा के साथ हमको घर ले जाने के लिए तैयार कर रहा है। मेरे को कहते हैं फलानी डेट को यह करेंगे, मैं कहती हूँ मुझे यह नहीं बोलो, कल क्या होगा, देखा जायेगा और जो हुआ सो अच्छा। जो होगा सो अच्छा, अब क्या करने का है? आज क्या करना है? विकर्माजीत कर्मातीत बनने की यह घड़ी है, बाबा बना रहा है। बाबा ने साकार में बहुत सेवायें की, ऐसे कर्म सिखलाये, जैसे खुद करता है बच्चे ऐसे कर्म करो, अभी अव्यक्त हो करके भी कितनी सेवायें कर रहा है। कराने वाला बाबा है, हमको निमित्त बनाया है। जैसे खुद किया है ऐसे कर्म करो। तो जैसे बाबा अव्यक्त कैसा है, ऐसे अव्यक्त बनने से फरिश्ता बन जायेंगे। जब हम फरिश्ता हो जायेंगे तो कोई भी देहधारी से रिश्ता नहीं रहेगा। साक्षी हो करके पार्ट प्ले करेंगे। मैं 3 बारी ओम् शान्ति इसलिए कहती हूँ, मैं का अभिमान और मेरे की अटैचमेन्ट से छूट जायें क्योंकि यह दोनों खतरनाक हैं, जिसके पास यह थोड़ा बहुत होवे प्लीज़ इसे खत्म करो। ओके, ओम् शान्ति।

तीसरा क्लास

“पढ़ाई पढ़ो और पढ़ाओ, इसमें नम्बरवन बनो तो बहुत कमाई है”

(तीन बार ओम् शान्ति) इन तीनों ओम् शान्ति में पहला ओम् शान्ति मैं कौन? दूसरा मेरा कौन? आप मेरे हो? बाबा के हो। अब क्या करने का है? कोई भी घड़ी हमारी सफल न हो, यह अच्छा नहीं है। संगमयुग की हर घड़ी, हर घण्टे का बहुत महत्व है। सारे दिन में 8 घड़ी होती है और 24 घण्टे होते हैं। तो संगम पर 24 ही घण्टा याद और सेवा में सफल हुआ तो कहेंगे हम पदमापदम भाग्यशाली हैं। जिसका जितना हर घड़ी हर घण्टा सफल होता है, उसको उतनी आन्तरिक अविनाशी खुशी रहती है क्योंकि पढ़ाई में कमाई है। स्थूल पढ़ाई में तो बहुत खर्चा होता है फिर कमाते भी खूब हैं। हमने लौकिक पढ़ाई में खर्चा नहीं किया है। कई हैं जो भले ज्ञान में आये, पर वो पढ़ाई भी चालू रखी, समझा यह जरूरी

है और कइयों को तो बाबा की राय थी, वो अलग बात है। तो उस पढ़ाई में भी टाइम वेस्ट न करने वाले का महत्व होता है। भक्ति में भी भगवान कौन है, यह खोज थी तो जो भी बुजुर्ग, सम्बन्धी या छोटे वो सब प्यार करते थे। अब भगवान की खोज पूरी हुई तो अभी आप सब मुझे प्यार करते हो। सब प्यार करते हैं ना!

इस पढ़ाई में कोई खर्चा नहीं, जितनी पढ़ाई पढ़ो और पढ़ाओ इसमें नम्बरवन बनो। और सेवा में जो साथी होते हैं वो ऐसे मिलते हैं तो एक दो के सहयोग से बाबा का नाम बाला करने के निमित्त बनते हैं, तो बहुत खुशी होती है। भले नाम किसी का भी हो, पर काम तो बाबा का है ना। कई बार कई जगह पर बाबा के नाम से

काम होता है और कई बार किसी के अच्छे कर्म से बाबा का नाम बाला होता है। इसके लिए हमारे तन मन धन से कोई भी गलत काम न हो, तो ऐसे बाबा के आज्ञाकारी बच्चों की बहुत कमाई जमा होगी। बाबा की आज्ञा है जिस तन में बैठे हो, भाई का है या बहन का है पर दोनों को नशा है बाबा हमारा, हम बाबा के। बाबा कहता है मेरे बच्चे मीठे बच्चे, मुरली की हेडिंग में पहले यही होता है ना। आजकल बहुत अच्छे-अच्छे गीत बने हुए हैं, ऐसे गीत सुनते रहो याद में भी रहो। बाबा भी मेरा गीत सुनता था तो बाबा को अच्छा लगता था। बड़े बड़े मशहूर साधू महात्मायें भी हमारा भगवान के लिए प्यार देख बहुत मान देते थे, अच्छा समझते थे।

अभी तो भगवान मेरा बाप है, वो कहता तू मेरा बच्चा है तो कितनी खुशी है! अभी और खुशी कहाँ से मिलेगी? तो यह सत्संग यानी सच्चाई को जीवन में लाने का संगठन होता है। याद में कमाई है या सेवा में कमाई है? दोनों में कमाई है। याद नहीं

करते हैं तो दिल खाता है जबकि याद सहज है और याद से विकर्म विनाश होते हैं।

तो कुछ भी होता है मैं 3 बारी सबसे ओम् शान्ति जरूर कहलवाती हूँ क्योंकि एक मैं कौन हूँ, तो देह-अभिमान से फ्री हो जाते। बाबा रोज़ कहता है बच्चों में देह-अभिमान बहुत है, यह बाबा से देखा नहीं जाता है। देही-अभिमानी स्थिति बाबा को अच्छी लगती है। जरा भी देह-अभिमान न हो। किसी भी देहधारी से अगर प्यार है तो बाबा का प्यार नहीं मिल सकेगा। तो मेरे में वन परसेन्ट भी देह-अभिमान न हो।

हिम्मते बच्चे मददे बाप। मैं सारी लाइफ को सामने रखती हूँ, हिम्मते बच्चे मददे बाप का कमाल है, कौन है जिसको यह अनुभव है? फिर सच्ची दिल पर साहेब राज़ी, यह वन्दर है। दिल सच्ची है कभी भी हेराफेरी नहीं की है तो साहेब राज़ी है। नियत साफ मुराद हांसिल... का वन्दर है। अच्छा। ओम् शान्ति।

“वरदानों को स्वरूप में लाने की विधि - बुद्धि की स्वच्छता”

(गुल्जार दादी जी)

1) दुनिया में अगर वरदान प्राप्त करना होता है, तो कड़ी तपस्या करनी पड़ती है, मस्तक झुकाना पड़ता है। लेकिन हमको वरदान लेना है तो हमें क्या करना है? बाबा ने भिन्न-भिन्न मुरलियों में यह स्पष्ट किया है कि वरदान लेने के लिए, वरदान अनुभव करने के लिए हमारा मन और बुद्धि आधार है। उसके लिए एक तो हमारा मन एकाग्र होना चाहिए। एकाग्रता से कोई भी चीज़ किसी में डालो तो धारणा हो सकती है। हमारा मन अगर एकाग्र नहीं है, हलचल में है तो हम वरदान सुनेंगे, बाबा हमें वरदान देगा, सुनने में बहुत अच्छा लगेगा। लेकिन अन्दर उसका फल नहीं मिल सकेगा। यह वरदान तो लिफ्ट का काम करते हैं। सुनना अलग चीज़ है, स्मृति स्वरूप बनना अलग चीज़ है, इसमें सिर्फ अटेन्शन देने की जरूरत है। तो वरदान की धारणा के लिए एक तो मन की एकाग्रता चाहिए, दूसरा बुद्धि क्लीन और कलियर हो। अगर बुद्धि में जरा भी सफाई नहीं है और क्लियर नहीं है तो वरदान की धारणा नहीं हो सकती। 3- भोलानाथ को अगर राज़ी करना है तो उसकी सहज विधि है, सच्चाई और सफाई। सच्ची दिल से जो भी अपनी कमजोरी है उसे महसूस करें। कुछ न कुछ तो सभी में कमजोरी है। पुराने संस्कार, जिसको हम नेचर कह देते हैं। उस नेचर को भले हम दूसरों से छिपायें वो बात दूसरी है, बाबा के आगे स्पष्ट हो। बाबा को अपना दिलाराम समझ कर महसूसता से,

मिटाने चाहती हूँ, इस दृढ़ता से सुनाओ। ऐसे नहीं बाबा को सुना दो - ये मेरी कमजोरी है, आप मिटा दो। बाबा कहता है, मैं मदद तो करता हूँ, पर मिटाना तो आपको ही पड़ेगा।

2) कोई भी कमी है तो वह दिल में अन्दर बार-बार खाता जरूर है, लेकिन उसे समाप्त करने के लिए महसूसता और दृढ़ता से संकल्प करें, बाबा को कहें बाबा आप मुझे मदद करो मैं इसे खत्म करके दिखाऊंगी। दृढ़ता तो हमको ही धारण करना पड़ेगा। सच्चाई और सफाई से हम बाबा को अपना बना सकते हैं। वो संस्कार जो मोटे-मोटे तो खत्म हो गये हैं। सूक्ष्म रूप के संस्कार पुरुषार्थ में गैलप नहीं करने देते हैं। जो मैं बुद्धि से करना चाहूँ, बुद्धि और कहाँ भटके नहीं इसको कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थ।

3) हर साल हम बाबा से वायदा करते हैं कि अभी हम करके ही दिखायेंगे। अभी हम अपने आप से पूछूँ, जो बाबा से पिछले साल वायदा किया उसे कहाँ तक निभाया है? हमारे जो सूक्ष्म संस्कार हैं, जिसको नेचर कहते, वो पुरानी नेचर खत्म हुई है?

4) हर वरदान में बाबा हमें कोई न कोई शक्ति देता है। वो शक्तियाँ हमारे जीवन का आधार होनी चाहिए। जिस समय जिस शक्ति की आवश्यकता है, उस समय वो शक्ति हमारे काम आये। जैसे बाबा ने वरदान दिया कि सब बच्चे मेरे राजे बच्चे हो,

आप आत्मा मालिक हो इन कर्मेन्द्रियों की। पहला वरदान स्वराज्य अधिकारी भव का दिया। यह वरदान जिस समय चाहिए उस समय काम में आता है? अगर समय पर काम में नहीं आता है, तो कारण क्या? जरूर हमारा मन-बुद्धि क्लीन और क्लीयर नहीं है।

5) बाबा हरेक बच्चे को उसी नशे में देखना चाहते हैं, जो कोई पूछे कि भगवान कहाँ रहता है? तो आप फ़लक से कह सकोगे कि भगवान तो मेरे दिल में रहता है। अगर कोई रावण की चीज़ आपके दिल में है, तो वहाँ बाबा कैसे रहेगा? इतनी हमारी दिल साफ़, पुराने संस्कारों से मुक्त होनी चाहिए तब वरदान स्वरूप में समायेगा और समय पर काम में आयेगा।

6) जहाँ भी हम रहते हैं वह हमारा पेपर हॉल है। वहाँ हमारा पेपर होना ही है, जिनसे कनेक्शन है उनसे ही पेपर होता है इसलिए अगर वरदान प्राप्त करना है तो उसके लिए पहली चेकिंग होनी चाहिए - कोई भी पुराना कमजोर संस्कार छिपा हुआ न हो। अगर कोई कमजोर संस्कार, नाममात्र भी है तो वरदान सुनने में भले अच्छा भी लगे लेकिन काम में नहीं आयेगा। अगर कोई भी कमी है, मानो आलस्य ही है, डोन्ट केयर का संस्कार है, समाने की शक्ति नहीं है, तो यह कमी भी हमको धोखा दे देती है।

7) अगर सर्व शक्तियों का वरदान लेना है, सर्वगुण सम्पन्न बनना

है। तो सब प्राप्तियां जीवन में चाहिए। अगर मर्यादा में कोई कमी है तो भी हम समान और सम्पन्न नहीं कह सकेंगे। ब्रह्मा बाप ने कितनी मर्यादायें धारण की, लास्ट दिन तक भी कितने पत्र लिखे। कोई दिनचर्या लास्ट दिन तक मिस नहीं की। लास्ट रात्रि को क्लास कराकर बाबा ने अव्यक्त रूप धारण किया। तो समान बनना माना, गुण और शक्तियाँ पूरे धारण हों। अमृतवेले से लेकर रात्रि तक जो भी श्रीमत है, मर्यादायें हैं, वह विधिपूर्वक पालन हों। तो वरदान को स्वीकार करके स्वरूप में लाना, इसे चेक करो। स्वरूप में वर्णन करना नहीं होता है, स्वरूप बनना होता है।

8) मम्मा का एक ही शब्द था - बाबा का कहना और मेरा करना। मम्मा ऐसी फरमानदार, वफ़ादार रही। कोई बात नहीं जंचती है लेकिन बाबा के मुख से जो निकला वो करना ही है, होना ही है। ऐसा निश्चय प्रैक्टिकल लाइफ में हो। हम लोगों को भी मदर-फादर को फालो करना है। बाबा के एक-एक वरदान में कितनी ताकत भरी हुई है, वो ताकत समय पर हमें काम आये। इसके लिए मन की एकाग्रता, दृढ़ता और बुद्धि की क्लीननेस और क्लियरनेस चाहिए। वो हम सब चेक करें और चेंज करें। दूसरा चेंज में सहयोग दे सकता है लेकिन फिर भी चेंज खुद को ही करना पड़ेगा। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

“श्रेष्ठ धारणा खुशमिजाज़ बनाती है, दिमाग व्यर्थ सोचना बन्द कर देता है”

1) संगमयुग पर बाबा से हेल्थ, वेल्थ और हैपीनेस का वर्सा मिलता है। भक्ति में यह तीनों भगवान से मांगते थे, ज्ञान में यह अपने आप बाबा दे रहा है। भक्ति में जब तक सामने कोई मूर्ति नहीं, मंत्र नहीं तब तक याद नहीं कर सकते। ज्ञान मार्ग में न कोई मूर्ति, न मंत्र, न कोई माला.. ज्ञान मार्ग में समझ मिल गई। विवेक कहता है भक्ति में बहुत मेहनत है, बुद्धि भटकती है, धक्के खाती है। वहमी बन जाते हैं। करते हैं तो कुछ प्राप्ति नज़र नहीं आती, नहीं करते हैं तो डर लगता है, कुछ हो न जाये। बाबा ने ज्ञान देकर हमें निर्भय बना दिया है।

2) भक्ति के बंधनों से छुटकारा पाने के लिए बहुत बहादुरी चाहिए। देह के सम्बन्धों से, दुनियावी पदार्थों से छुटकारा पाना बड़ी बात नहीं है, लेकिन भक्ति से छुटकारा पाना सहज नहीं है, यह ज्ञान नास्तिक के लिए सहज है, वह जल्दी समझ जायेगा लेकिन भक्त के लिए कठिन है। भक्ति में जो अल्पकाल की प्राप्ति है, उसमें वह फंसा रहता है। अब हमारी बुद्धि में भक्ति और

ज्ञान का कान्ट्रास्ट है, इसलिए अब भटकने की जरूरत नहीं। फालतू पैसा खर्च करने की जरूरत नहीं। अब समझ आ गई कि एक बाबा को याद करना है, अपनी जीवन सफल करनी है।

3) कई पूछते हैं - हमारी धारणा श्रेष्ठ कैसे बनें? धारणा श्रेष्ठ तब बनेगी जब पहले बुद्धि क्लीयर हो। बुद्धि का भटकना छूटे। बुद्धि एकाग्र होकर परमात्मा बाप को याद करे तो धारणा श्रेष्ठ बने। एक धारणा होती है गुणों की, दूसरी धारणा होती है ज्ञान वा योग लगाने की। गुण धारण करने की धारणा अलग है, योगयुक्त होने के लिए धारणा अलग है। योगयुक्त रहने के लिए अशरीरी होकर बाबा से लिंक जोड़ने की लगन हो। इसके लिए चाहिए अन्तर्मुखता और एकान्त। जिसे योगयुक्त होकर रहने की लगन है वह कभी यह नहीं कह सकता कि एकान्त में रहने का टाइम नहीं मिलता है। उसकी रात में भी कई बार आंख खुल जायेगी। नींद ऐसी नहीं होगी जो सोया और खोया। कई ऐसे कहते हैं कि क्या करें नींद ही नहीं खुली। कोई फिर कहते नींद आती ही नहीं।

योगी के यह चिन्ह नहीं हैं। ऐसे नहीं नींद आये तो बहुत आये, न आये तो आये ही नहीं। जो फालतू ख्याल करते हैं उन्हें नींद नहीं आती। जो फालतू ख्यालात से फ्री रहते हैं वह बाबा की याद में सो जायेंगे। कई हैं जिन्हें योग के टाइम नींद आयेगी, वैसे नींद के समय नहीं आयेगी। हमारी नींद ऐसी हो जो गुडनाइट की और बाबा की गोद में चले गये फिर आंख खुलने का समय आये तो अपने आप खुल जाए, दिल कहे उठकर बाबा को याद करूँ। जो उठते ही बाबा की याद में बैठता है, वह बाबा का प्यार पाता है। उस समय सुस्ती न आये। यदि सिर में दर्द भी होगा तो ठीक हो जायेगा।

4) जो अच्छी तरह प्यार से बाबा को याद करता है, बाबा उसे कहता है - बच्चे मैं तुम्हारी माँ भी हूँ, प्रीतम भी हूँ... वह बहुत प्यार करता है। उस प्यार में उसी समय मन का दुःख व शरीर का दर्द सब चला जायेगा। यह धारणा है। कोई-कोई कहते हैं मुझे खुशी का अनुभव नहीं होता। लेकिन अनुभव तब हो जब ज्ञान को धारण करो और औरों को दान करो। समय पर जो सेवा सामने आये, उसे दिल से, सच्चाई से, प्रेम से करो तो खुशी आयेगी। जो मजबूरी से काम करता उसे खुशी नहीं आती। जो काम दिल से करता, उसे खुशी आती है।

5) बाबा ने हम बच्चों को बता दिया है कि किसकी दबी रहेगी धूल में, किसकी राजा खाए, कभी अचानक आग लग जाती है, भूकम्प आ जाता है .. तो क्यों न हम अपना सब सफल कर लें। सफल तभी होता है जब बाप के नाम से करते हैं, सफल करने से खुशी आती है। वह खुशी माइन्ड को हेल्दी बना देती है। मन भी हेल्दी, तन भी हेल्दी हो जाता है क्योंकि मन का तन से गहरा कनेक्शन है। हमारा मन सदा हेल्दी हैपी रहे। जो मन से खुश है, वह कभी नहीं कहेगा कि मैं बहुत बीमार हूँ या तकलीफ है। सदा खुश रहने की पहले धारणा करनी है। ध्यान रखना है - मैं एवर हैपी रहूँ। अन्दर से रहूँ, किसको दिखाने के लिए न रहूँ, बाबा का शुक्रिया मानते, अपने भाग्य को देखते दिल सदा खुश रहे।

6) बाबा कहते बच्चे तुरन्त दान महापुण्य के महत्व को समझ खुश रहो। तुरन्त दान अर्थात् जो संकल्प आये कर लो, कल किसने देखा है। वैसे दान पुण्य कहा जाता है। दान यथाशक्ति दिया जाता, पुण्य जितना चाहे करो। समय पर हमदर्दी से किसको मदद करो तो उसके दिल से दुआ निकलेगी। दान किया तो कुछ न कुछ जमा किया, बीज बोया। बाबा के यज्ञ में कभी यह शब्द नहीं आता कि डोनेशन लेते हैं। यज्ञ सेवा अर्थ बीज बो रहे हैं, यह कर्म की खेती है, सत्य धर्म की स्थापना का कार्य है, बीज बो रहे हैं। इसका फल न केवल मुझे मिलेगा बल्कि अन्य भी खायेंगे। जितना जो तन-मन-धन सफल करता है उतना खुशी में रहता है। मात-पिता भी हमें खुशी में नाचता हुआ देख खुश होते हैं।

7) दुनिया की आत्मायें जो हमें नहीं जानती हैं वह भी सोचती हैं - यह इतना खुश कैसे रहते हैं। हमारी श्रेष्ठ धारणा खुशमिजाज़ बना देती है। दिमाग फालतू नहीं सोचता तो खुशमिजाज़ रह सकते हैं। बाबा को दिल से याद करने वाले को खुशी होती है क्योंकि वह विजयी बनता जाता है। उसका मन, कर्मेन्द्रियों पर कन्ट्रोल आ जाता है। जो इच्छा ममता के वश में है, कर्मेन्द्रियों के गुलाम है, उसे खुशी नहीं हो सकती। जिसे कोई इच्छा न हो वह बहुत खुश है, जो संगठन में रहते गुणग्राही है वह खुश है। जरा भी निंदा करने वाला कभी खुश नहीं रह सकता। तो पहले हैपीनेस चाहिए फिर हेल्दी-वेल्टी रहेंगे।

8) जिन बातों से खुशी गुम होती है, वहाँ से रास्ता बन्द कर दो। जहाँ से खुशी आती है वह रास्ता खुला रखो। मेरी खुशी गुम क्यों होती है! चेक करना है - कोई गफ़लत है? बाबा ने जो इतना खजाना दिया है, वह कोई छिन न सके, इतना खबरदार, केयरफुल रहना है। संगमयुग की यह खुशी सतयुगी राज्य का अधिकारी बना रही है।

9) सेवा ब्राह्मण जीवन की शोभा है। ब्राह्मण सेवा न करें तो देवता बन न सकें। सेवा तन-मन-धन को पावन बनाती है। जो तन-मन-धन से सेवा में लगता है वह सहज पावन बन जाता है। नहीं तो हमारा तन-मन-धन सब पापी था, पावन नहीं बनता, वह खुश नहीं रह सकता। अगर सोचते हैं कि यथाशक्ति करेंगे... सोच कर देंगे, तो बाबा भी उसे सोच कर देता है। जिसे दिनरात यह चिंतन रहता कि करना है तो अब, कल किसने देखा! वह खुश रहते हैं। जितना अभी तन से करो उतना तन्दरुस्त बनेंगे।

10) मधुबन में देखो मातायें कितनी दिल से 10-10 हजार रोटियां बनाती, सब्जियां कांटती.. उन्हें कितनी खुशी रहती है। कभी नहीं कहते रोटी बेलने से हाथ दर्द होने लगे हैं। फालतू सोचने से सिरदर्द होता है। सोच दर्द ले आता है। कुछ करने से दर्द चला जाता है। हेल्दी बनना हो तो फालतू मत सोचो। वेल्टी बनना हो तो बाबा गरीब-निवाज़ है, पैसा नहीं है, दिल तो बड़ी है ना। अन्दर से देने की दिल हो तो खुशी बढ़ेगी। खुशी सच्चाई से आती है। सेवा करो, सदा मीठा बोलो, औरों की दुआयें लेते चलो तो सदा खुश रहेंगे। रफ़ बोलने से खुशी गायब हो जाती है।

11) जो खुशी से पुरुषार्थ करते हैं वह उड़ते रहते हैं, भारी नहीं होते। जो समझते हैं मैं बाबा की गोद में बैठा हूँ, बाबा के कंधों पर बैठा हूँ, बाबा के सिर पर बैठा हूँ... उन्हें बहुत खुशी रहती है। बाबा हमें अपना सिरमौर बनाता, डबल क्राउन देता है। जितना ऊंचा सोचो उतना ऊंचा बनेंगे। जितना फालतू सोचो उतना धारणा कम होती है। किसी को न देख बाबा ने जो खुशी का खजाना दिया है, जितना लूट सको लूटो और हेल्दी वेल्टी बन जाओ। अच्छा।